आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received:20/1/2023; Published:31/01/2023

अग्नि पुरुष

प्रो. वृषाली मांद्रेकर

मूल: निलबा खांडेपारकर (कोंकणी)

मैं आदिम
देखता हूँ मैं नसनस में
हमेशा बहनेवाला खून
आदिबंध के प्रवाह में से
लड़ाई झगड़ों में से अविरत स्नान करनेवाला
बिगडते - बिगडते उपेक्षित यह
मेरा बलवान धरती की काया
देख रहा हूँ मैं धरती के महापट पर
हत्यारे लिखने लगे खून से
प्रार्थना के महाशब्द
शून्य देव-धर्म के आधार पर
जीव हिंसा के कारण
हुए इस खून के प्रलय से
कौन सी धर्मयात्रा करने का आयोजन जारी है?
अस्त्र-शस्त्र के शक्तिपीठ ने
असाह्य पीड़ित के आसुओं का
कोई मूल्य नहीं है।
कहाँ दृश्यहीन हो गया
इतने बरसों का मेरा इतिहास
एक बड़ा सा शून्य !!!
जिसमें भी सृष्टि से प्रलय तक की महायात्रा
एक विश्व प्रकाश और तम का
गतिमान चक्र समाविष्ट था
नहीं थी सिर्फ प्रतिक्षा
जितनी धरती ने की थी

नीर निर्माण होने तक ही था
सिर्फ जीवनयज्ञ
सोम वर्षा वीर्य और बीज
इनकी नीयति से ही जीवन योनी से
आकार धारण करनेवाली व्यवस्था का
मैं प्रस्तापित
इसलिए मुझे साबित करने की
कभी जरूरत महसूस नहीं हुई,
और वह आत्मा की नहीं होती
उसका न कभी जन्म होता है न मृत्यु
इसीलिए न हुआ कभी मेरा जन्म
वैसे ही न आयेगा कभी मृत्यु का प्रश्न
मैं मृत्युंजय !
मैं ही वह विश्वपुरुष
कालपुरुष
मस्तिष्क मेरा परब्रहम
आलिंगन मेरी सृष्टि
श्वास मेरा समीर
नेत्र मेरे भास्कर
और वाणी मेरी अग्नि
हूँ मैं जन्मदाता इस नभ का
और क्षीर सागर
यही इस नभ का अपत्य
पत्ता नहीं हिलता मेरी आज्ञा के बिना
पर मैं हूँ सर्वत्र
गुजरता हूँ सभी में से
महायात्रिक हूँ मैं इस सृष्टि के सनातन शक्ति की
इस महायात्रा में
चतुर्युग - वेदी पर समग्र परिवर्तन
काल के बदलाव में नया मानव नूतन सृष्टि
और जन्म होता रहा नये अनुमान का
निर्मित होता गया नया नया अवतार
इसीलिए बढ़ती गयी प्रतिष्ठा
भृगु, दक्ष, मरिची, अत्रि
पितृतुल्य ऋषियों की
जगज्जननी धरती के
हर एक योनी में से

मैं भी जन्म लेता ही रहा रजो गुणों के साथ
शायद इसीलिए आपने मुझे
कहा अप्रमेय, चतुर्मुख ब्रह्मा
नदी पहाड़, वन, जंगल के वास से
सत्वगुण के स्वरूप में
रोकता रहा मैं ब्रह्मांड के अरीष्ट
सम्भालता रहा मैं चतुर्भुज वेदों को
शायद इसीलिए आपने मुझे विष्णु कहा
सप्तपदी नृत्योत्सव में
अभिव्यक्त होते हुए भी
मैं हर एक दिन तमस गुणों से
मृत्यु के अधीनि होता रहा मैं
फिर भी मैं चिरंजीव
शायद इसीलिए मैं मृत्युंजय शिव
मैं ही हूँ वह आदि हिरण्यगर्भ
तीसरी आँख से आँख मिलानेवाला रुद्र
चैतन्य सृष्टि के
प्रकाश का तेजस्वी होकर
विश्व समुदाय में पृथ्वी की नई - नई योनियों –
खोजता रहता हूँ
मनाने उत्सव गर्भ विधि के
इसीलिए जन्म जन्मान्तर से सृष्टि की विशालता
रूपाकार लेती रहती है।
ब्रह्मांड का सबसे अनुपम सौंन्दर्य है नारी
और आकर्षण मुझे उस सौन्दर्य का
इसीलिए हर नारी में काम देह निहारनेवाला
इन्द्र हूँ मैं
मैं ही हूँ विश्वमोहिनी असुरों को बहकानेवाली,
ययाति और दुष्यंत भी मैं ही हूँ
करने दो मुझे सोम प्राशन
इस शाश्वत वर्तमान में
सृष्टि के इस महानृत्योत्सव में
सभी अणु रेणु
होने से अपने अपने जगह पर सचेत
होने दो प्रकृति और पुरुष का संगम
और अपनाने दो इस तम के अंधकार को
वे भस्मीभूत कर धरती के गुरुत्वाकर्षण को

करने दो नस-नस अर्न्तः अग्निपुरुष की
और भर जाने दो अनंत सृष्टि तप्त गैग्मा
प्राकृत प्रलय में से बाह्य प्रलय तक
घटित कब होगा
यह कभी सोचा ही न था मैंने
मैं प्रधान ब्रह्मपुरुष संयुक्त और वियुक्त
चक्रधारी इस ब्रह्मांड का
प्रारंभ हुआ था सृष्टि से
महायात्रा के इस असीम नभ में
अस्थिरता के आघातों सें
सिर्फ सहता ही रहा हूँ
इस निराशा में भी है एक आशा
शायद चौदह मन्वतरों की ब्रह्मरात के अन्त पर
होगा सृष्टि निर्माण दूसरे ब्रह्मदिन का
मेरे अर्न्त:पुरुष को निःशब्दता की साद
महाप्रलय के उस महामौन में

****